

# सूरदास

## कवि परिचय :

सूरदास भक्ति-काल के सर्वश्रेष्ठ कृष्ण-भक्त कवि हैं । उनका जन्म सन् 1478 में दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव के एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ । वे अंधे थे, पर लगता है- वे जन्म से अंधे नहीं थे । मथुरा और आगरा के बीच यमुना नदी के तट पर स्थित गऊघाट पर उन्होंने संगीत, काव्य और शास्त्र का अभ्यास किया और विनय के भाव से पदों की रचना की । आगे चलकर वे वल्लभाचार्य के शिष्य बन गये और ब्रज जाकर गोवर्धन के पास पारसोली नामक जगह पर अपना स्थायी निवास बनाकर पद लिखते रहे ।

सूरदास वात्सल्य रस के बड़े भावुक कवि थे । ब्रजभाषा पर उनका पूरा अधिकार था । 'सूरसागर' उनकी प्रमुख प्रामाणिक रचना है । इसमें उन्होंने श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया है । कवि ने कृष्ण का पालने पर झूलना, घुटनों के बल पर चलना, चाँद के लिए मचलना, नहाते समय रूठ जाना, माखन की चोरी करना, मिट्टी खाना - आदि प्रसंगों का बड़ा मनमोहक वर्णन सहज-सुन्दर-सरस ढंग से किया है ।

श्रीकृष्ण की बाल-लीला के प्रसंग में कवि ने माखन-चोरी का सुन्दर चित्र अंकित किया है । गोपिकाओं के मन में यह अभिलाषा है कि बालक कृष्ण उनके घर आएँ, उनकी मटकी में हाथ डालकर माखन की चोरी करें । कृष्ण भी उनकी अभिलाषा पूरी करते हैं । चोरी पकड़ी जाती है, माता यशोदा से शिकायत भी पहुँचती है ।

“तेरो लाल मेरी माखन खायो ।

दुपहर दिवस जानि घर सूनी, ढूँढ़ि ढँढोरि जाय ही आयो ।

खोल किवार सून मँदिर में, दूध, दही सब माखन खबायो ।

छींकै काढ़ि खाट चढ़ मोहन, कछु खायो कछु लै ढरकायो ।

दिन प्रति हानि होत गोरस की, यह ढोटा कौन रंग लायो ।

सूरदास कहति ब्रजनारि, पूत अनोखो जायो ।”

### शब्दार्थ

लाल - पुत्र । ढूँढ़ि ढँढोरि - खोज-खाजकर । किवार - किवाड़ या दरवाजा ।  
मँदिर - घर । छींका- शिक्या, रस्सी या तार आदि का जाल जो छत में या ऊँचे स्थान पर  
खाने-पीने की चीजें रखनेके लिए लटकाया जाता है । मोहन - कृष्ण । ढरकायो - गिरा  
दिया । गोरस - दूध, दही, मठा, छाछ आदि । ढोटा - पुत्र । पूत - पुत्र । अनोखा -  
आश्चर्यजनक ।

### पद को समझें :

बालक-कृष्ण की दधि-चोरी की लीला का वर्णन है । ब्रजभूमि की एक ग्वालिन माता  
यशोदा से शिकायत करती है कि तेरे लड़के ने हमारा माखन खा लिया । दोपहर को घर  
सूना देखकर, खोज-खाजकर तेरा बेटा मेरे घर में घुस गया । उसने सूने घर का किवाड़  
खोल दिया और घर में जो कुछ दूध-दही-माखन रखा था, सब के सब साथियों को खिला

दिया । खाट पर चढ़कर उसने छींके पर रखे हुए दही को खा लिया और कुछ गिरा दिया ।  
इस प्रकार हर दिन दूध, दही, माखन का नुकसान होता है । पता नहीं, यह लड़का कौन-  
सा रंग या ढंग लाया है ? तुमने तो एक अनोखे लड़के को जन्म दिया है ।

### प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) ब्रजनारी माता यशोदा से कौन-सी शिकायतें करती हैं ?

(ख) बालकृष्ण की माखन-चोरी का वर्णन कीजिए ।

(ग) ब्रजनारी ने माता यशोदा से यह क्यों कहा कि 'पूत अनोखा जायो' ? इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) कौन किससे शिकायत करता है ?

(ख) किस पर चढ़कर कृष्ण दही निकालते हैं ?

(ग) ब्रजनारी ने किसे अनोखा कहा है ?

(घ) 'कौन रंग लायो' का अर्थ क्या है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) यहाँ लाल किसे कहा गया है ?

(ख) किस समय घर सूना था ?

(ग) प्रतिदिन किसकी हानि होती थी ?

(घ) दही कहाँ रखा हुआ था ?

1. 'माखन' एक संज्ञा-पद है। इस तरह इस पद में जितने संज्ञा पद हैं - उन्हें छाँटकर लिखिए। नीचे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं जिनका वह रूप लिखिए जो आप समझते हैं -

याद रखिए - किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम, गुण अथवा अवस्था को बतानेवाले शब्द को संज्ञा कहा जाता है।

संज्ञा के पांच भेद हैं-

- क. व्यक्तिवाचक संज्ञा - राम, सीता, महानदी, कटक
- ख. जातिवाचक संज्ञा - मनुष्य, गाय, नदी, शहर
- ग. भाववाचक संज्ञा - वीरता, सच्चाई, गरीबी
- घ. समूहवाचक संज्ञा - मेला, गुच्छा, परिवार
- ङ. द्रव्यवाचक संज्ञा - सोना, लोहा

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची (समानार्थी) शब्द लिखिए।

लाल _____,	माखन _____
दिवस _____,	किवार _____
पूत _____,	अनोखा _____

3. नीचे लिखे सही शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए।

दिवस - दीवस, दहि - दही, हानि - हानी, नारि - नारी

4. तुक मिलाइए।

मेरी	खायो	गोरस
.....	.....	.....
.....	.....	.....